भाग दौड़ से मुक्त होकर घर बैठे कर रहे हैं उत्पादक अपने सामानों की बिक्री, देश विदेश के खरीदार ऑनलाइन ही डिजाइन पसंद कर रहे, कारोबार बढ़ने की उम्मीद जगी

वर्चुअल बाजार से वाराणसी का सिल्क उत्पाद भरने लगा नई उड़ान

राहत

वाराणसी | निज संवाददाता

कोरोना कॉल में डगमगाए व्यापार को वर्चुअल मेला संजीवनी दे रहा है। सरकार की पहल को एक जनपद एक उत्पाद योजना (ओडीओपी) के उत्पादकों ने सराहा है। यह रोजगार नई उड़ान भरने लगा है।

घर बैठे उनके उत्पाद को देश विदेश के खरीदार पसंद कर रहे हैं। इससे अब उनमें कारोबार की बढ़ने की उम्मीद जगी है। मेले में ऑनलाइन खरीद और बिक्री हो रही है। बनारस के सिल्क उत्पादों की मांग भी बढ़ी है। देश- विदेश में बनारस की सिल्क की साड़ी की मांग हमेशा से रहती है। जब से स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने ओडीओपी योजना शुरू हुई, तब से इसके कारोबार में और तेजी आई है, लेकिन कोरोना की वजह से हर तरह का कारोबार बैठा हुआ है। ऐसे में प्रदेश सरकार ओडीओपी के उत्पादों को वर्चुअल मेला के जरिए आम लोगों तक पहुंचाने का प्रयास कर रही है। बनारस के भी करीब दो दर्जन उत्पादक अपने उत्पाद का डिस्प्ले किया है। मेले में अपना स्टॉल लगाने वाले राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित बुनकर कॉलोनी के वकील अहमद ने बताया कि सरकार की यह पहल अच्छी है।

उत्पाद को राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलेगी और मांग में भी तेजी आएगी। इसका रिस्पांस धीरे धीरे मिलेगा। पांडेयपुर की शकुंतला मिश्रा ने भी बनारसी सिल्क के सूट, साड़ी, दुपट्टा के स्टाल लगाए हैं। उन्होंने कहा कि इस डिजिटल प्लेटफॉर्म से विक्रेता के साथ खरीदार को भी भागदौड़ नहीं करनी पड़ रही है। रमना की मीनाक्षी सिंह, कश्मीरीगंज के राज सिंह, नदेसर के प्रशांत गुप्ता व भेलूपुर के मोहम्मद सारीक ने भी स्टॉल लगाए हैं। बताया, इससे व्यापार के क्षेत्र में जागरूकता आएगी।

मीनाक्षी।

वकील।

राज सिंह।

मोहम्मद शारिक।

जीआईसी से जोड़कर बढ़ा रहे हैं व्यापार

सहायक आयुक्त हथकरघा नीतेश धवन ने बताया कि बनारस के सिल्क उत्पाद को आगे बढ़ाने के लिए जीआईसी की ओर कदम बढ़ाया गया है। विभाग की ओर से ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रदर्शनी लगाई जाएगी। चुनौतियों को देखते हुए इसको आगे बढ़ाया जा सकेगा।

दो लाख से अधिक हैं उत्पादक

बनारस में सिल्क उत्पाद से दो लाख से अधिक लोग जुड़े हैं। नितेश धवन ने बताया कि इसमें हैंडलूम के 25 हजार बुनकर हैं। जबकि डेढ़ लाख से अधिक पावर लूम के बुनकर हैं। लेकिन ज्यादा मांग हैंडलूम से बनी बनारसी साड़ी की ही होती है।

विदेश में 75 प्रतिशत सिल्क साड़ी की मांग

रेशम उत्पाद से जुड़ी महिला व्यापारी और इस मेले में स्टाल लगने वाली शैलजा अरोड़ा ने बताया कि कोरोना काल में इस योजना के तहत व्यापारियों को मजबूती मिली। विदेशों में बनारसी सिल्क उत्पाद की 75 प्रतिशत और देश में 70 प्रतिशत मांग बढ़ी। ओडीओपी योजना से बनारस की महिलाओं और पुरुषों को रोजगार मिला है। बताया कि बनारस के मूंगा सिल्क, चंदेरी सिल्क, कतान सिल्क, दुपियन सिल्क समेत 30 से अधिक किस्मों की सिल्क के उत्पादन और मांग में तेजी से इजाफा हुआ है। इस मेले से और तेजी आएगी।